की प्रवृत्ति का उदय हुआ। अब लोगों में भूमि प्राप्त करने की साथ ही जब लोग समृद्ध हुए तो इस बात का भी भय था कि कोई विदेशी उन पर आक्रमण न कर दें और धन-जन का विनाश न हो।

II जनता का दूसरा वर्ग योद्धाओं का की अस्तित्व में आया। शांति के समय में वे आक्रमण से राज्य की रक्षा करते थे। युद्ध-काल में उनका आक्रमण करना भूमि जीतना आदि होता था, जिससे बढ़ती हुए आबादी के लिए रहने का स्थान प्राप्त हो सके तथा व्यापारियों के लिए बाजार मिल सके। राज्य के जीवन में यह दूसरा चरण है जिसको अस्तित्व में लाने का कारण आर्थिक होता है। इस समय तक समाज में दो वर्ग - उत्पादक वर्ग और सैनिक वर्ग अस्तित्व में आ जाते हैं।

शीघ्र ही आंतरिक विग्रह उत्पन्न होते हैं निवासियों के हित परस्पर टकराते हैं। योद्धाओं में भी विग्रह हो जाता है। ऐसी स्थिति में सामंजस्य पूर्ण व्यवस्था स्थापित करने की समस्या उठ खड़ी होती है। इस कारण तीसरा और अंतिम वर्ग अस्तित्व में आता है, जिसे प्लेटो ने संरक्षक का वर्ग कहा है।

संरक्षक वर्ग राज्य का शासक वर्ग होता है। यह राज्य में व्यवस्थाएँ बनाए रखता है, और लोगों को अपने-2 कार्य क्षेत्र में बनाये रखने का कार्य करता है। इस प्रकार राज्य की स्थापना इसके अंतिम रूप में हो जाती है।

राज्य का स्वरूप :

प्लेटो ने राज्य को मानव आत्मा का प्रतिबिंब अथवा व्यक्ति का वृहद रूप माना है। राज्य का स्वरूप आणविक नहीं वरन् आवयविक है। शरीर अपने पूर्ण राज्य में इकाई होता है और उसका रूप एक समग्रता का होता है, जिसके अंगों को पृथक नहीं किया जा सकता है। राज्य की जनसंख्या के विविध

वर्गों की स्थिति बनी रहती है और केवल वे अपने-२ ही कार्य कर सकते हैं। प्लेटो ने इस बात पर बल दिया है कि मानव शरीर में जो सामंजस्य बना रहता है, वह इस कारण से होता है कि प्रत्येक अंग अपने क्षेत्र में अपना कार्य करता है और दूसरे से नहीं झगड़ता। मानव शरीर की ये विशेषताएँ राज्य की विशेषताएँ हैं राज्य एक पूर्ण है, तथा इसका निर्माण करने वाले एक व्यक्ति इसके अभिन्न अंग हैं केवल राज्य में, ही व्यक्ति अपना विकास कर सकता है और अपनी पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

उत्पादक वर्ग मुख्य रूप से किसान एवं मजदूर होते हैं, इस वर्ग में वे लोग आते हैं, जिनमें आत्मा-शक्ति की प्रधानता होती है। आत्म-शक्ति साहस की प्रेरणा उत्पादन करती है तथा सैनिकों को शांति व युद्ध, सुरक्षा व आक्रमण दोनों में ही संघर्ष का कार्य करना होता है।

तीसरा वर्ग संरक्षकों का होता है। इस वर्ग में वे ही लोग आते हैं, जिनमें विचारशक्ति की प्रधानता होती है। विचारशक्ति उनमें बुद्धिमत्ता, ज्ञान व गुण उत्पन्न करती है। शासकों में इन गुणों का होना आवश्यक है। इस वर्ग का कार्य राज्य में सामंजस्य व्यवस्था व एकता बनाए रखना होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार राज्य मानव आत्मा का प्रतिबिम्ब है, जिसके तीन तत्वों के आधार पर राज्य के लोगों का तीन वर्गों में निर्माण होता है। उसने उत्पादकों को पीतल व्यक्ति, सैनिकों को रजत तथा संरक्षकों को स्वर्ण व्यक्ति की संज्ञा दी है।